Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-III MARCH 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

स्वदेश दीपक के नाटकों में अभिव्यक्त समस्याएँ

डॉ. नील माधवी नरुका
व्याख्याता हिंदी विभाग,
विनायक पी.जी. महाविद्यालय,
चौमूं, जयपुर राजस्थान

साहित्य की गद्य विधाओं में नाटक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। नाटक ही एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से मानव जीवन की प्रत्येक घटना को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रस्तुति के लिए रंगमंच की भूमिका महत्वपूर्ण है। रंगमंच पर स्थिति होने की वजह से नाटक को दृश्य-श्रव्य काव्य भी खा जा सकता है। नाटक की उत्पत्ति के सम्बन्ध में यह माना जाता है कि नाटक के सृष्टा ब्रह्मा रहें हैं।भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में नाटक दिव्य उत्पत्ति का परिणाम माना है।1 ऋग्वेद से पाठ्य,सामवेद से गीत,यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस ग्रहण कर ब्रह्माजी ने चारों वेदों से एक-एक तत्व ग्रहण कर पंचमवेद नाटक की रचना की।

"जग्राह पाठ्य ऋग्वेदात्सामभ्यो गीतमेव च,
यजुर्वेदादभिनयान रसानाथर्वणादपि।'

साहित्य के क्षेत्र में नाटक अपना विशिष्ट स्थान रखता है।नाटक स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका कानिर्वाह करता है।नाटक दृश्य-श्रव्य विधा है। अतः अन्य साहित्य की अपेक्षा नाटक का बहुत ही गहरा असर होता है क्योंकि अन्य विधाओं को सिर्फ पढ़ा जा सकता है जबकि नाटक ऐसी विधा है जिसे पढने के साथ- साथ देखा भी जा सकता है।अतः नाटक रंगमंच से सम्बद्ध विधा है।

संस्कृत नाट्य परंपरा से लेकर वर्तमान समय तक कई नाटककार आये हैं जिन्होंने अलग-अलग विषयों पर आधारित नाटकों की रचना की है।इन नाटकों का उद्देश्य मनुष्य का मनोरंजन करना ही नहीं रहाबल्कि मनुष्य को जीवन जीने की कलातथा सभ्य नागरिक बनाने में महती योगदान रहा है।नाटक को रंगशिल्पी,रंगमंच,अभिनेता,दर्शकवर्ग इत्यादि के द्वारा पूर्णता मिलती है।

स्वदेश दीपक का प्रादुर्भाव बीसवी शताब्दी के अंतिम दशक में नाट्य क्षेत्र में हुआ।इन्होंने अपने नाटकों की रचना रंगमंच को ध्यान में रखकर की अतः रंगमंचीय दृष्टि से इनके नाटकों ने काफीसफलता हासिल की।अपनी प्रत्येक नाट्य रचना में अभिव्यक्त शैली की भिन्नता,विषय की नवीनता,पारंपरिक रचना विधान को छोड़कर नवीन रंगमंचीय प्रयोगों तथा शैलीशिल्प और कथ्य के क्षेत्र में आजादी का परिचय दिया।स्वदेश दीपक नब्बे के दशक के नाटक के क्षेत्र में प्रमुख हस्ताक्षर हैं।इनके नाटक काफी लोकप्रिय रहे।इनकी लेखन शैली काफी आक्रामक रही है। ये प्रगतिशील चेतना के नाटककार हैं अतः इनकी कृतियों में सामजिक व्यवस्था,राजनैतिक व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश दिखाई पड़ता है

स्वदेश दीपक ने अपने समकालीन नाटककारों के समान ही राजनैतिक-सामाजिक क्षेत्र को आधार बनाकर नाटक लिखे ।इनके नाटक प्रगतिशील चेतना के वाहक हैं।प्रमुख नाटक इस प्रकार हैं-

स्वदेश दीपक का जन्म 6 अगस्त,1942 को रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ।अंग्रेजी साहित्य में एम.ए.किया । इन्होने लंबे समय तक गाँधी मेमोरियल कॉलेज,अंबाला छावनी में अंग्रेजी के प्रोफेसर के रूप में अध्यापन किया। आप को 2004 में संगीत नाटक अकादमी सम्मान से सम्मानित किया गया ।

कृतित्व:-

स्वदेश दीपक की कहानी,उपन्यास व नाटकों पर 15 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

कहानी संग्रह –अश्वारोही, मातम , तमाशा, प्रतिनिधि कहानियां,किसी अप्रिय घटना का समाचार नहीं,निर्वाचित कहानियां
प्रमुख उपन्यास:-नं 47 स्क्वाड्रन,मायापोत
नाटक :-बाल भगवान, कोर्टमार्शल, जलता हुआ रथ, सबसे उदास कविता, काल कोठारी संस्मरण :-मैंने मांडू नहीं देखा

स्वदेश दीपक 2006 के बाद से लापता हैं ।मानसिक बीमारी की वजह से 1991 से 1997 तक लेखन क्षेत्र से कटे रहे।बायोपोलर नामक सिंड्रोम से ग्रसित होने की वजह से उनकी मानसिक हालत बहुत ख़राब थी।मानसिक बीमारी से उबरनेके बाद उन्होंने अपने अनुभव अपने संस्मरण"मैंने मांडू नहीं देखा" में व्यक्त किये ।स्वदेश दीपक नाटक जगत में काफी चर्चित रहे क्योंकि इन्होने अपने नाटकों की रचना रंगमंच को ध्यान में रखकर की ।

बाल भगवान:-

स्वदेश दीपक द्वारा रचित लंबी कहानी 'बाल भगवान' का यह नाट्य रूपांतरण है।तीन अंकों एवं अनेक दृश्यबंधों में संयोजित यह नाटक धार्मिक अन्धविश्वासों,स्वार्थपूर्ण मनोवृतियों,धार्मिक पाखंडों एवं संवेदनहीनता को उजागर करता है।इस नाटक का मुख्य पात्र सिद्धड नामक मंदबुद्धि बच्चा है।नाटक की शुरुआत में पुजारी धर्म की विवेचना करता है"हम धर्म का सहारा क्यों लेते हैं? धर्म का संबल क्यों पकड़ते हैं ? भय से अथवा भक्ति से।" नाटक के आरंभ में बलि का दृश्य दिखाकर उसे धर्म से जोड़ा गया है।

सिद्धड पागलपन और भूख की स्थिति के कारण रतन के लड़का होने की बात मुँह से निकालता है। संयोगवश रतन को लड़का हो जाता है। सिद्धड ब्राह्मण का बेटा है अतः मंदबुद्धि सिद्धड को लड़का होने की बात सच होने पर बाल भगवान के पद पर बिठा दिया जाता है। सिद्धड के माता-पिता नैतिक रूप से पतित और लालची हैं अतः पैसे कमाने के लिए अपने मंदबुद्धि बेटे का सहारा लेते हैं ।लोगों की बातों में आकर उसे बाल भगवान बनाकर एक ही जगह पर बिठा देते हैं ।एक ही जगह पर बैठे रहने और लगातार खाने की वजह से उसकी तबियत बिगड़ने लगती है। डॉक्टर को दिखाने पर उसका खाना बंद कर दिया गया ।खाना बंद करते ही सिद्धड का बोलना भी बंद हो जाता है। सिद्धड खाने की रट लगाता रहता है और उसका पिता नेता के चुनाव मेंहारने या जीतने के प्रश्न को लेकर जबरदस्ती बुलवाना चाहता है-"मात्र एक शब्द! एक शब्द! कल मंत्री आएगा ।एक शब्द! मात्र एक शब्द-कांग्रेस! लेकिन सिद्धड बोल नहीं पाता ।सिद्धड सिर्फ कांग शब्द बोल पता है। अंत में सिद्धड सभी से परेशान होकर भागने की कोशिश करता है लेकिन पंडित उसके फूले हुए पेट पर लाता मार देता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है ।

कोर्टमार्शल:-

हिंदी नाट्य साहित्य में स्वदेश दीपक को स्थान दिलाने वाली उनकी महत्त्वपूर्ण कृति कोर्टमार्शल है।रंगमंच की दृष्टि से लिखा गया यह नाटक 1991 में प्रकाशित होता है।कोर्टमार्शल नाटक साहित्य,आलोचना और रंगकर्म को नवीन अनुभव देता है।यह नाटक वर्तमान की क्रूर सच्चाई,भयावह अमानवीय तंत्र और आम आदमी की छटपटाहट और विद्रोह का बेहद प्रासंगिक और चुनौतीपूर्ण नाटक लगता है।नाटक की मुख्य समस्या हैवर्णव्यवस्था।समाज का कोढ़ कहलाने वाला जातिवाद,वर्णव्यवस्था,दमन-शोषण के अमानवीय चेहरे का उद्घाटन कोर्टमार्शल करता है-"बराबर की बात दूर,सोचने के स्टार पर भी हम अपने से छोटों को बराबर का अधिकार देने को तैयार नहीं।कारण वे सामंती प्रवृत्तियां,सामंती सोचने का तरीका,फ्यूडल टेंडेन्सीज जिनसे हमें अभी तक आजादी नहीं मिली है।" साथ ही वकील और जज आदि की घोर अमानवीयता को,ठंडी संवेदना और मूल्यहीनता को,अवसरवादिता और आपसी सांठ-गांठ को तथा ऊपर से दिखते बनावटी चेहरों का चित्रण हुआ है।सवार रामचंदर को सेना के दो बड़े अफसरों द्वारा जातिगत हीनता की वजह से तंग किया जाता है जिसके कारण रामचंदर दोनों अफसरों को गोली मार देता है।इसके बाद कोर्टमार्शल की प्रक्रिया शुरू होती है।नाटक का संपूर्ण परिवेश एवं उसका तानाबाना आर्मीजीवन

की संस्कृति और वहाँ की न्याय व्यवस्था कोर्टमार्शल को लेकर बुना गया है जिसे सूरतसिंह,कैप्टन विकाश राय,मेजर अजय पुरी,कैप्टन कपूर,गुप्ता,सूबेदार,बलवान,रामचंदर आदि पात्रों एवं संवादों के माध्यम से मंचीय जीवंतता प्रदान की गयी है।

जलता हुआ रथ:-

'जलता हुआ रथ' नाटक स्वदेश दीपक के क्रांतिकारी विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति है।सामाजिक और राजनैतिक हालातों पर कटाक्ष करता हुआ यह नाटक राजनेताओं के दोहरे चरित्र पर कटाक्ष करता है।1984 के सिख दंगों के चित्रफलक पर रचित नाटक जलता हुआ रथ भिखारियों के जीवन की दयनीयता को दर्शाता है।अधेड़ कहता है-"बता भाई झंडा।क्यों लगा रहा है इसकी जीभ में सलाई।झंडा-जितना दर्द,उतनी ज्यादा भीख।"

स्वदेश दीपक ने इस नाटक के माध्यम से देश में परिवर्तन लाने के लिए क्रांति का आह्वान किया है और मनुष्य को उसकी शक्ति का एहसास दिलाया है जिसके द्वारा वह सत्ता पलट सकता है। नाटक का प्रमुख पात्र बाबा कहता है-"भगवान् ने इंसान को बहुत ताकतवर बनाया है। जिस दिन आदमी के अंदर प्रकाश आ जाये सिंहासन पलट देता है,माथे से मुकुट उतार मिट्टी में मिला देता है।

नाटक का मुख्य पात्र अधेड़ बाबा है और पूरे नाटक की कहानी उसके आस-पास ही घूमती है। अधेड़ बाबा ने सिख दंगों में अपने बेटे और परिवार को खो दिया है अतः वह मानसिक रूप से अस्थिर हो गया है।

देश की गड़बड़ाती आर्थिक स्थिति का चित्रण नाटककार ने नाटक में किया है।लोग भीख मांगने को मजबूर हैं।शहरों में भिखारियों की बढती संख्या अमीर वर्ग के लिए परेशानी का सबब बन चुकी है।भिखारी छोटे बच्चों से भीख मांगने के लिए तरह-तरह से प्रताड़ित करते हैं जैसे हाथ-पैर काट देना,जीभ में गरम सिलाई लगाना इत्यादि जिससे लोग उन पर दया खाकर ज्यादा भीख दे सकें।नाटककार ने अधेड़ बाबा के माध्यम से अपने मार्क्सवादी विचारों को उद्घाटित किया है और ऐसा लगता है कि नाटककार ने स्वयं अपने विचारों को पाठक वर्ग तक पहुँचाना चाहते हैं।नाटक के अंत में बाबा का यह वाक्य समूचे नाटक का सार प्रस्तुत कर देता है-"वायदा।वोट।नोट।दमन।दहशत।धर्म।दुश्मन।जैनोसाइड।जनसंहार।सावधान।सावधान।सावधान।

सबसे उदास कविता:-

सबसे उदास कविता का कथानक एक ऐसी साहसी लड़की के बारे में बताता है जो भ्रष्ट पुलिस अफसर,न्यायिक जजआदि को जनता की अदालत नाम दे उन्हें मृत्युदंड देती है अर्थात उनकी हत्या कर देती है।अंत में क़ानून द्वारा उसे फाँसी की सजा दि जाती है।इस नाटक का उद्देश्य वर्तमान प्रशासनिक न्यायिक व्यवस्था के प्रति विरोध व्यक्त करना है।रोजगारों को बेरोजगार कर दिया जाता है।मेहनताना माँगे जाने पर मजदूरों की हत्या कर दी जाती है।इन हत्यारों को जनता की अदालत में मृत्युदंड देना ही मुख्य उद्देश्य रहा है।इस नाटक का संपूर्ण कथ्य इसकी मुख्य पात्र अपूर्वा के इर्दगिर्द घूमता है जो पेशे से एक तेज-तर्रार पत्रकार है।वह एक पिछड़े गाँव में हो रहे अत्याचार और अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाती है।अपूर्वा गाँव के जमींदार तथा पुलिस की असली तस्वीर गाँव वालों के समक्ष उपस्थित करती है।गाँव वालों के साथ मिलकर अपूर्वा जमींदार और पुलिस से कड़ी टक्कर लेती है।अपूर्वा हर स्तर नेता के चरित्र का पर्दाफाश करती है।प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति जैसे उच्चपदाधिकारियों की संवेदनशून्यता पर अपूर्वा कहती है 'जब किसी दुर्घटना में सैंकड़ों लोग मरते हैं तो क्या करते हैं राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री? शोक संदेश।मात्र शोक संदेश।' यह नाटक देश में फैली गरीबी की समस्या को उजागर करता है। आज भी देश अधिकांश जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन जी रही है। उस पर भी विडंबना यह कि नेता महोदय गरीबों का मजाक उड़ाते हुए इसे भगवान की देन कहते हैं।

काल कोठारी :- काल-कोठारी नाटक एक कलाकार के अंतर्द्वंद और संघर्ष को दर्शाता है। यह नाटक एक थियेटर कलाकार की निजी जिंदगी और उसकी अपनी पत्नी,माता-पिता तथा मित्रों के साथ संबंधों को चित्रित करता है। साथ ही हमारी संस्कृति में व्याप्त भ्रष्टाचार को उद्घाटित करता है

नाटक का तीसरा दृश्य युवा थियेटर कलाकार रजत के बारे में बताता है। वह एक सफल और प्रसिद्ध थियेटर कलाकार है जिसने अपने अभिनय के द्वारा काफी प्रसिद्धि हासिल की ।उसके अभिनय से प्रभावित होकर उसकी प्रशंसक मीना शादी का प्रस्ताव रखती है जिसे वह स्वीकार कर लेता है और शादी कर लेता है। उनकी शादीशुदा जिंदगी में कई तरह के उतास्चढाव आते हैं ।मीना और रजत के बीच स्थायी रोजगार को लेकर काफी बहस होती है। रजत नौकरी नहीं करना चाहता लेकिन फिर भी वह एक इंटरव्यू देने जाता है जहाँ उससे मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछे जाते हैं जैसे शेक्सपियर के मातापिता का क्या नाम था ? जबकि दूसरी और एक लड़की जिसकी राजनेता तक पहुँच है,उससे आसान प्रश्न पूछे जाते हैं जैसे भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति कौन थी इत्यादि ।अतः यह नाटक एक कलाकार के संघर्षमय जीवन के बारे बताता है ।

कोर्टमार्शल समाज की उन फ्यूडल टेंडेन्सीज पर तेज तमाचा है,जो आज तक हमारा सोचने और समझने का तरीका नहीं बदल पाई ।इन सामंती प्रवृत्तियों के कारण ही आज तक "संविधान द्वारा बराबरी का अधिकार दिए जाने पर भी बड़े आदमी ने छोटे आदमी को,ऊँचे आदमी ने नीचे आदमी को,यह अधिकार नहीं दिया।" यदि संविधान द्वारा दी गई,समानताओं की माँग की भी की जाती है,तो समाज और कानून ने व्यवस्था से विरोध के जो रास्ते बन रखं ा हैंवह मीलों लंबे हैंजो कभी समाप्त नहीं होते।इस सन्दर्भ में कैप्टन विकाश राय का कथन सत्य है-"शक्तिशाली लोगों के विरोध को राजनीतिक विरोध कहा जाता है,जो उन्हें एक ही छलांग में बिठा देता है,सत्ता के बिलकुल पास रखी कुर्सी पर और कमजोर लोगों का विरोध,इसे विरोध नहीं विद्रोह का नाम दिया जाता है,जो उन्हें एक ही छलांग में पहुँचा देता हैफाँसी के तख्ते तक ।'' कोर्टमार्शल नाटक वास्तव में उस सत्य तक पहुँचने की कोशिश है जिसके चलते एक सीधा-साधा और अनुशासन सैनिक अपने ही अफसरों पर गोली चला बैठता है ।

सवार रामचंदर सेना में सवार के पद पर होता है। वह समाज की दृष्टि में निम्न समझी जाने वाली जाति से संबंध रखता है। कैप्टन बी.डी.कपूर और कैप्टन वर्मा के सामंती तेवर रामचंदर को काफी प्रताड़ित करते हैं ।इन अफसरों की फ्यूडल मानसिकता सवार रामचंदर द्वारा 5000 मीटर की रेस जीते जाने को नहीं स्वीकार कर पाती और न ही सी.ओ.साहब द्वारा उसकी अतिरिक्त खुराक लगाए जाने को ही स्वीकार कर पाती है। सूबेदार बलवान सिंह को कहकर कैप्टन बीडी.कपूर रामचंदर को अपने यहाँ अर्दली और सेवादार नियुक्त करा लेता है और उसके बाद दमन का ऐसा चक्र आरंभ होता हैजिसकी अंतिम परिणति कोर्टमार्शल के रूप में होती है। उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग को दबाये जाने की बरसों पुरानी कवायद शुरू हो जाती है। चाहकर भीरामचंदर अपने प्रति किये गए अन्याय का प्रतिकार नहीं कर पाता और न ही उसकी आवाज को वहाँ तक पहुँचने दिया जाता है,जहाँ पहुँचकर न्याय मिलने की संभावना की जा सकती थी ।"जब छोटे-छोटे विरोध लगातार दबा दिए जाएँ तो हमेशा एक भयंकर विस्फोट होता है। प्राणघातक विस्फोट ।

सवार रामचंदर के केस में भी यही प्राणघातक विस्फोट होता है। कैप्टन बी.डी. कपूर तथा कैप्टन वर्मा के सामंती तेवर रामचंदर को हथियार उठाने पर मजबूर कर देते हैं और उसमें उसका साथ देता हैव्यवस्था का ढीलापन,जो उचित समय पर उचित निर्णय नहीं लेता।फलतः रामचंदर का कोर्टमार्शल होता है ।

कैप्टन विकाश राय का यह कथन- "हाँ जानता हूँ मैं ।नियम और क़ानून केवल छोटे और कमजोर लोगों के लिए होते हैं।कहाँ मानते हैं,रूल्ज को बड़े और ताकतवर लोग।" नाटक की मूल संवेदना को बखूबी व्यक्त करता है।नियमकायदे और क़ानून शब्द का परिचय सदा कमजोर लोगों को देना पड़ता है।बड़े लोग या फिर ताकतवर लोग तो इन कानूनों के चिथड़े उड़ाते ही नजर आते हैं या फिर कमजोरों की आवाज को दबाते दिखाई देते हैं ।यह नाटक भी ताकतवर और कमजोर वर्ग की कहानी कहता है। यह समाज की व्यवस्था की पोल खोलता है,जिसका नियम ही यह है कि-"छोटे आदमी की शिकायत को वहीँ दबा दो और बड़े आदमी की गलती देखकर आखें बंद कर लो ।"

भारतीय सेना एक ऐसी सरकारी संस्था है,जहाँ जाति के आधार पर आरक्षण की अनुमति नहीं है। बावजूद इसके यह भी जातिभेद जैसी घृणित परंपरा से मुक्त नहीं हैइसी भेद का अंकन करना ही नाटककार का उद्देश्य रहा है। सेना की शानदार परंपराओं के पीछे कौन-कौन से खेल छुपकर खेले जाते हैं इसकी तफ्तीश करना ही इस नाटक का मुख्य उद्देश्य रहा है। जैसे-जैसे नाटक आगे बढ़ता है,दर्शकों तथा मंच पर उपस्थित पात्रों की आत्मा के द्वार पर सत्य अपनी दस्तक देनी शुरू कर देता है। यह नाटक परदे के पीछे छिपे सच को जानने की एक ईमानदार कोशिश है। रामचंदर के केस के पक्ष में जो दलीलें दी जाती हैं,वह समाज की अन्य कुप्रथाओं की ओरभी अनायास इशारा कर देती हैं।

निष्कर्ष:-

इस अध्याय में स्वदेश दीपक के समकालीन नाटककारों और उनकी कृतियों की संक्षिप्त चर्चा की गयी।इस समय के सभी नाटककारों के नाटकों के विषय लगभग एक जैसे हैं।चाहे पौराणिक कहानियाँ हों,चाहे मिथकीय चेतना से युक्त कथावस्तु हो या चरित्रों पर आधारित कथानक हों,प्रत्येक नाटककर ने अलग-अलग शैली में एक ही समस्या को उठाया है जो कि सामजिक-राजनैतिक समस्या से जुडी हुयी है। इस युग के नाटककारों ने देश में व्याप्त सामजिकराजनैतिक विद्रूपताओं,भेदभाव,स्त्रियों की दुर्दशा,भुखमरी की समस्या,रोजगार की समस्या इत्यादि को नाटकों का विषय बनाया।

इस युग के नाटककारों का मुख्य उद्देश्य नाटकों के माध्यम से देशकी त्रस्त जनता को जागरूक करना रहा है। लोगों के अंदर ऐसी चेतना का संचार करना चाहते थे जिससे लोग अपने खिलाफ होने वाले अन्याय का विरोध कर सकें औरसाथ ही अपने अधिकारों की माँग कर सकें और साथ ही अपने अधिकारों की माँग कर सकें।राजनीतिगत विषमताओं और राजनेताओं के दोहे चरित्र की अभिव्यक्ति प्रत्येक नाटककार ने की है। अतः देखा जाए तो स्वदेश दीपक के समकालीन नाटककारों के प्रतिपाद्य विषय एक ही हैं।बस शैली का अंतर दृष्टिगत होता है।

संदर्भ

1. नाटक बाल भगवान,स्वदेश दीपक,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली पटना
2. कोर्टमार्शल,स्वदेश दीपक,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पटना
3. जलता हुआ रथ,स्वदेश दीपक,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
4. सबसे उदास कविता,स्वदेश कविता,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
5. कोर्टमार्शल,स्वदेश दीपक,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली पटना

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com